केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : HINDI

विषय कोड Subject Code : 002 ELECTIVE

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : SATURDAY, 22-4-17

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : HINDI

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाएं : Write code No. as written on the top of the question paper : Code Number 29/1/2

Set Number ① ● ③ ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No . of supplementary answer -book(s) used —

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं
Person with Disabilities : Yes / No NO

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B D H S C A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No NO

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सोफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used : —

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

2233325
002 / 16576

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

## खण्ड - 'क'

उत्तर1 काव्यांश

(क) 'जो बीत गई सो बात गई', अर्थात् जो बात बीत गई है, उसके बारे में नहीं सोचना चाहिए। क्योंकि एक बार बीत जाने के बाद उसको परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

(ख) आकाश का उदाहरण इसलिए दिया गया है क्योंकि जिस प्रकार किसी व्यक्ति के सगे-संबंधियों की मृत्यु हो जाती है, उसी प्रकार प्रतिदिन इस आकाश के भी कितने ही तारे टूट जाते हैं, छूट जाते हैं, इससे दूर अर्थात् अलग हो जाते हैं पर वह कभी शोक नहीं मनाता है तथा इसके ज़रिए कवि मनुष्य को प्रेरित है तथा बताता है कि अपनों से अलग होने पर दुख नहीं मनाना चाहिए।

(ग) प्रिय पात्र के बिछुड़ने पर शोक नहीं मनाना चाहिए क्योंकि यह एक सतत प्रक्रिया है, जो सबके साथ घटित होती है। जो आता है, वह जाता भी अवश्य है।

(घ) कलियों और बेलों के मुरझाने से कवि का तात्पर्य है कि एक न एक दिन सभी इन बेलों व कलियों की भाँति ही मुरझा जाएँगी व अपनों से बिछुड़ जाएँगे ~~कि~~।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ङ) प्रस्तुत काव्यांश का मुख्य भाव यह है कि जो बीत जाती है उसे जाने देना चाहिए क्योंकि अतीत को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। जो एक बार बीत गई वह बात समाप्त हो जाती है।

इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि ~~एक बार~~ किसी के चले जाने पर शोक नहीं करना चाहिए। यह प्रकृति का नियम है। अतः व्यर्थ में शोक या विलाप करने से कोई वापस नहीं आ सकता है।

उत्तर 2 गद्यांश

(क) 'परचना' से लेखक का तात्पर्य किसी से परिचित होने से है।
लेखक ने इसी उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया है कि पशु और बालक भी जिनके साथ अधिक रहते हैं, उनसे परच अर्थात् परिचित हो जाते हैं। उन्हें जानने लग जाते हैं।

(ख) परिचय ही प्रेम का प्रवर्तक है।
बिना जाने-पहचाने, किसी के स्वभाव, आचार, व्यवहार आदि से परिचित हुए बगैर किसी से प्रेम नहीं हो सकता है। प्रेम अन्तःकरण का भाव है परंतु यह

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

किसी के प्रति तभी विकसित हो सकता है जब हम उनसे परिचित हों।
अतः परिचय ही प्रेम का प्रवर्तक है।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश में मनुष्य, पशु-पक्षी, नदी-नाले, वन-पर्वत, सागर अर्थात सारी भूमि व उसके सभी जीवों को देश कहा गया है।
लेखक का मन्तव्य है कि देश केवल राजनीतिक सीमा नहीं है, किसी भूमि का टुकड़ा ही नहीं है अपितु उससे जुड़ी प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति, समाज, प्रकृति, संसाधन सब मिलकर देश कहलाते हैं।

(घ) देश के स्वरूप से परिचित होने के लिए लेखक ने ~~किन~~ ~~बातें~~ निम्न बातों का उल्लेख किया है -

i बाहर निकलकर खेतों को लहलहाते देखना, नाले किस प्रकार झाड़ियों के बीच से बह रहे हैं, चरवाहे व अन्य लोगों की गतिविधियों को देखें।

ii जो व्यक्ति राह में मिले उनसे बातें करना, उनके साथ किसी पेड़ की छाया के नीचे आराम करना, उनके साथ समय व्यतीत करना।

iii उन्हें जानना व समझना।

(ङ) देशवासियों के साथ घड़ी-आध-घड़ी बैठकर बात करने का सुझाव लेखक ने इस उद्देश्य से दिया है कि इससे व्यक्ति अन्य देशवासियों से परिचित हो सके, उनके

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रति प्रेम व जुड़ाव का भाव जागृत हो सके व उनके हृदय में अपने लिए स्थान बना सके व एकता की स्थापना हो सके।

(च) देश से प्रेम हो जाने पर अन्तर्मन के भावों में निम्न परिवर्तन होगा-
तब हृदय से सचमुच यह इच्छा प्रकट होगी कि वह (अर्थात् अपना देश) कभी न छूटे, वह सदा हरा-भरा और फलता-फूलता रहे, इसके धन-धान्य व समृद्धि में निरंतर वृद्धि हो तथा सभी देशवासी, इसके सभी प्राणी सुखी रहें।

(छ) देश के रूप सौंदर्य के अभ्यस्त हो जाने के लिए हमें निम्न कार्य करने चाहिए -
i देश ~~की~~ के विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करना चाहिए।
ii इसके प्राकृतिक सौंदर्य को निहारना चाहिए।
iii प्रतिदिन इसके संपर्क में रहना चाहिए तथा अन्य देशवासियों से बात-चीत आदि के माध्यम से जुड़े रहना चाहिए।
iv इसकी विशेषताओं की ओर ध्यान देना चाहिए।
इस प्रकार, देश का सौंदर्य, स्वरूप हमारी बुद्धि में समा जाएगा व हम इसके अभ्यस्त हो जाएँगे।

(ज) उपयुक्त शीर्षक - "देश प्रेम व परिचय प्रेम का प्रवर्तक" है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

## खण्ड- 'ख'

उत्तर 8

### निबंध

### स्वच्छ - भारत अभियान

"स्वच्छता" अर्थात् साफ सफाई। यह हमारे जीवन की एक मौलिक आवश्यकता है। इसकी प्राप्ति पैसे खर्च करके, या संसाधनों आदि के प्रयोग से अधिक दृढ़-निश्चय व स्वकार्यों व प्रयासों से होगी।

हमारे देश की स्वतंत्रता प्राप्ति को अनेक वर्ष बीत चुके हैं किंतु आज भी हम अपने लिए स्वच्छ परिवेश का निर्माण नहीं कर पाए हैं।

"स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई, लेकिन स्वच्छता की प्राप्ति अभी बाकी है।"

चारों ओर गंदगी, कूड़े के ढेर आदि देखना एक सामान्य बात हो गई थी। आज़ादी के बाद इस ओर कभी राजनेताओं आदि का ध्यान गया ही नहीं। सभी केवल विकास व केवल विकास के एजेंडे पर कार्य करते रहे किंतु यह भूल गए कि बिना स्वच्छता के तो विकास को भी हासिल करना अत्यंत कठिन है। यदि पर्यावरण व परिवेश ही स्वच्छ नहीं होगा तो इसके नागरिक भी स्वस्थ नहीं होगें जिससे उनकी कार्य करने की क्षमता में गिरावट आएगी, इस प्रकार तो कभी भी देश विकास के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर ही नहीं सकता है।

अंततः, इंतज़ार समाप्त हुआ, 2014 के लोकसभा चुनावों के विजयी होने पर माननीय प्रधानमंत्री ने 2 अक्तूबर, 2014 को 'स्वच्छ - भारत अभियान' प्रारंभ किया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य 2, अक्तूबर 2019 तक देश को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाना है। क्योंकि

" स्वच्छता ही स्वास्थय प्रदान करती है। "

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं झाड़ू लगाकर इस अभियान का शुभारंभ ~~प्रारंभ~~ किया। जिसके पश्चात् स्वच्छता की स्थिति में सुधार होने लगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए हर माध्यम, रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट, पत्र-पत्रिका आदि के द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया तथा ताकि यह अभियान लोकप्रिय हो सके व जन-जन तक पहुँचे।

"स्वच्छ भारत का इरादा,
इरादा कर लिया हमनें,
देश से अपने वादा,
ये वादा कर लिया हमनें"

आदि प्रकार की पंक्तियाँ विज्ञापनों के माध्यम से खासी लोकप्रिय हुई। प्रधानमंत्रीजी के इस अभियान की देश में ही नहीं अपितु विदेशों में सराहना की गई।

विभिन्न राजनेताओं तथा अभिनाताओं आदि ने इसका खुलकर प्रचार प्रसार किया, सार्वजनिक स्थानों पर झाड़ू लगाकर इसको समर्थन दिया। इससे देश की स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है। आज लोगों में इस अभियान के चलते ही जागरूकता बढ़ी है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

स्वच्छ-भारत अभियान, एक सामाजिक अभियान है। कुछ लोगों ने इसको समर्थन केवल प्रसिद्धि पाने के लिए किया तो कुछ दिल से सहयोग कर रहे हैं। किंतु एक सामाजिक अभियान होने के कारण, केवल सरकारी नीतियाँ इसे सफल नहीं बना सकती हैं।

इसे सफल बनाने के लिए आवश्यक है देश के सामान्य निवासी इसमें सहयोग करें। इस अभियान की सफलता पूर्ण रूप से जनसमर्थन पर आश्रित है।

इसी अभियान को सफल बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री जी ने प्रत्येक घर में शौचालय निर्माण पर भी ज़ोर दिया है।

जिन घरें में शौचालय नहीं है, उन्हें इसके निर्माण में सरकार की ओर से सहायता दी जा रही है जिसके चलते देश के ग्रामीण क्षेत्र, जहाँ शौचालय नहीं थे, वहाँ तेज़ी से इनका निर्माण किया जा रहा है।

देश को स्वच्छ बनाने में सरकार का यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण व बड़ा कदम है। क्योंकि खुले में शौच करने से भी अनेक बीमारिया फैलती हैं।

अतः यह एक सामाजिक अभियान है, जिसकी सफलता के हम सभी प्रतिबद्ध हैं। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम इस अभियान में अपना पूर्ण सहयोग देंगे तथा 2019 से पूर्व ही राष्ट्र को पूर्णतः स्वच्छ बनाएँगे।

"स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत"

अपने प्रयासों से देश के सौंदर्य को बढ़ाएँगे, जीवन की गुणवत्ता तथा देश के विकास की गति में वृद्धि करेंगें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर 4

प्रेषक-
शिफाली भारद्वाज
परीक्षा भवन
नई दिल्ली - 26

22 अप्रैल, 2017

सेवा में
श्रीमान प्रधानाचार्य जी
दिल्ली पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली

विषय- कंप्यूटर अध्यापक के पद हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आपके विद्यालय में कंप्यूटर अध्यापक / अध्यापिका (प्राइमरी कक्षा के लिए) का पद रिक्त है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मैं इस पद के लिए आवेदन देना चाहती हूँ।

मैंने इसी विद्यालय से अपनी स्कूली शिक्षा संपन्न की है। मेरी पढ़ने में अत्यंत रुचि है। मैंने कंप्यूटर ट्रेनिंग में दक्षता प्राप्त की हुई है। मेरी टाइपिंग स्पिड भी 100 w/pm है। मेरे परिवार का वातावरण पूर्णतः पठन-पाठन के अनुकूल है किंतु अचानक मेरे पिताजी की मृत्यु हो जाने से परिवार का भार मेरे कंधों पर आगया है। मैं पूर्ण ईमानदारी व निष्ठापूर्वक मन लगाकर अपना काम करूँगी। तथा मैं आपको विश्वस्त करती हूँ कि मेरी ओर से आपको कभी तकलीफ नहीं होगी व न ही मैं आपको किसी प्रकार की शिकायत का मौका दूँगी।

स्ववृत

प्रार्थी - शिफ़ाली भारद्वाज

पिता का नाम - स्व. श्री नरेश कुमार भारद्वाज

घर का पता - F-1/112, रोहिणी
नई दिल्ली

स्थायी पता - उपर्युक्त पता

दूरभाष नं - 9868112935, 9211508065

शैक्षणिक योग्यता

i दसवीं कक्षा में CBSE (सी.बी.एस.ई) बोर्ड में 9.8 CGPA।

ii बारहवीं कक्षा में CBSE बोर्ड में 95% अंक प्राप्त किए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

iii कंप्यूटर ट्रेनिंग में पूर्णतः दक्ष हूँ।

अन्य योग्यता

i कला व गायन में भी कुशल।

सभी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज, रिपोर्ट कार्ड, सर्टीफिकेट्स आदि पत्र के साथ ही संलग्न हैं।

एक सकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा में....!!!

प्रार्थी

शिफाली भारद्वाज

उत्तर 5

भारी बस्तों के बोझ से दबता बचपन

आज बच्चों का बचपन कहीं खो गया है। उनकी स्वाभाविकता मानो कहीं गुम हो गई है। आधुनिक शिक्षा पद्धति पश्चिम से प्रेरित है। बच्चों को केवल किताबी ज्ञान होता है तथा अन्य किसी प्रकार कोई ज्ञान नहीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आज छोटे-छोटे बच्चे भी भारी-भारी बस्तों को लेकर स्कूल जाते हैं। जबकि उन पुस्तकों में व्यवहारिक ज्ञान होता ही नहीं। बच्चों के बस्तों में किताबों से अधिक विभिन्न प्रकार की फाइलें व चार्ट होते हैं जो समय-समय पर उन्हें मिलते रहते हैं।

बच्चों का बचपना खोने लगा है। उन भारी बस्तों के बोझ से बच्चों का बचपन दब गया है, दम तोड़ने लगा है। स्कूल में पढ़ाई, फिर घर आकर होमवर्क, व अन्य कार्य और खेलना का समय शून्य।

यह शिक्षा पद्धति यहाँ की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। यह केवल बच्चों पर अनावश्यक दबाव डाल रही है।

बच्चों की स्थिति सुधारने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा पद्धति में सुधार किया जाए व व्यवहारिक ज्ञान की ओर अधिक ध्यान दिया जाए।

उत्तर 6 (क) 'समाचार'- इससे अभिप्राय केवल खबरों से है जो सामाजिक सरोकारों आदि समाज के प्रत्येक वर्ग से जुड़ी हों तथा जिन्हें पढ़ने में पाठकों की रुचि हो व जो देश व देशवासियों के लिए महत्त्वपूर्ण हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) पत्रकारीय लेखन से अभिप्राय किसी समाचार पत्र अथवा पत्रिका में लिखे गए लेख से है। कभी कभी ये विशेष विषयों पर भी लिखे जाते हैं।
ये समाचारों से भिन्न होते हैं।

(ग) फ्रीलांसर पत्रकार, औपचारिक ~~रूप~~ या अनौपचारिक रूप से किसी भी एक समाचार पत्र अथवा पत्रिका के साथ नहीं जुड़ा होता है।
यह वेतन के अनुसार किसी भी पत्र-पत्रिका के लिए कार्य करता है।

(घ) फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ से अभिप्राय उस महत्वपूर्ण खबर से होता है जिसे अन्य खबरों को रोककर, कम-से कम शब्दों में जनता तक पहुँचाया जाता है।

(ङ) मुद्रण माध्यम की दो विशेषताएँ -
i इसमें स्थायित्व होता है।
ii इसे अपनी सुविधानुसार जब चाहे पढ़ा जा सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

## खण्ड- 'ग'

उत्तर 7 प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'अंतरा' की केदारनाथ सिंह द्वारा रचित कविता 'बनारस' से लिया गया है।
प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने बनारस शहर के सौंदर्य का अद्भुत व अत्यंत सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या

बनारस शहर में लहरतारा या मडुवाडीह से एक धूल का बवंडर उठता है जिसके कारण इस पौराणिक महत्त्व वाले महान शहर की जीभ किरकिराने लगती है अर्थात चारों ओर धूल उड़ रही होती है। जो है वह सुगबुगाता है अर्थात जो अस्तित्व में है, उसमें हलचल प्रारंभ हो जाती है, उसमें कंपन होने लगता है और जो प्रत्यक्ष रूप से दृष्टव्य नहीं वह दृष्टिगोचर होने लगता है, दिखने लगता है। अर्थात पेड़ों पर नए पत्ते व कोपलें आने लगती हैं। दशाश्वमेध घाट पर जाने पर पता लगता है कि घाट का आखिरी पत्थर भी कुछ मुलायम हो गया है अर्थात कठोर हृदय व्यक्ति का हृदय भी कोमल होने लगता है। सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में नमी होती है। वहाँ के लोगों में प्यार, स्नेह व अपनत्व की भावना होती है। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण होता है, भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भी दूर होने लगता है अर्थात उन्हें भी भीख मिलनी प्रारंभ हो जाती है।

इस प्रकार बनारस के शहर में वसंत का आगमन होता है जो चारों ओर व्यक्ति व वातावरण सभी को हर्षोल्लास व नई उमंग व जोश से भर देता है।

विशेष

i सरल - सुबोध भाषा का प्रयोग

ii देशज शब्दों - किरकिराना, सुगबुगाता आदि का प्रयोग

iii मानवीकरण अलंकार
– शहर की जीभ किरकिराने लगती है।

iv बैठे बंदरो - अनुप्रास अलंकार

v काव्य में नवीनता।

vi चित्रात्मकता व लयात्मकता का गुण।

vii वसंत का बनारस में आगमन का सजीव व मनोहारी चित्रण।

उत्तर 8 (ख) 'वसंत आया' - कविता में कवि ने वसंत पंचमी के अमुक दिन होने का प्रमाण बताया है कि, अमुक दिन वसंत पंचमी है, ऐसा कैलेंडर में लिखा है तथा इसका प्रमाण है कि उस दिन दफ्तर में छुट्टी होना है।

'वसंत आया' कविता में कवि बताना चाहता है कि आज मनुष्य प्रकृति से इतना दूर हो गया है कि वह इसमें होने वाले स्वाभाविक परिवर्तनों को पहचान ही नहीं पा रहा है। व्यक्ति बिना कलेंडर आदि देखे नहीं बता सकता है कि वसंत पंचमी कब होगी, अतः इसकी प्रमाणिकता यही है कि उस दिन दफ्तर में छुट्टी होगी।

(ख) 'दुख ही जीवन की कथा रही' - कथन के आलोक में निराला का जीवन-संघर्ष -
निराला जीवन भर कठोर परिस्थियों से युद्ध लड़ते रहे। उन्हें जीवन में अपार दुख मिले। बचपन में माता की मृत्यु हो गई। विवाह हुआ किंतु विवाह के कुछ समय पश्चात् पत्नी की भी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् पिता, चाचा, चचेरे भाई एक-एक कर सब चल बसे।
अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने उनके हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। जीवन भर कठोर परिस्थितियों का सामना किया, गरीबी में जीवन व्यतीत किया तथा एक-एक कर सभी सगे-संबंधियों को भी खो दिया।
अतः जब वे विगत जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तब उन्हें महसूस होता है कि 'दुख ही उनके जीवन की कथा रही'।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर 1

## जीवनी

### घनानंद

घनानंद का जन्म सन् 1677 ई. में उत्तर-प्रदेश में हुआ। वे दिल्ली के सुल्तान के मीर मुंशी व राज कवि थे। वहीं राजनर्तकी सुजान से उनका प्रेम था। एक दिन सुजान के कारण ही वह बादशाह के दरबार में कुछ बेअदबी कर बैठे। जिसके पश्चात उन्हें दरबार से निकाल दिया गया। सुजान ने उनका साथ नहीं दिया। वह निष्ठुर प्रेमिका सुजान की विरहाग्नि में जलते रहे। दरबार से निकाले जाने के बाद वे निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हुए।

घनानंद की प्रमुख कृतियाँ- 'सुजान-सागर' - सुजान की याद में, विरह वेदना आदि हैं।

घनानंद का मन शृंगार रस के वियोग पक्ष का वर्णन करने में अधिक रमा है। उनकी कविताओं / रचनाओं में विरह-पीड़ा का अत्यंत सजीव चित्रण हुआ है।

उनके काव्यों की भाषा ब्रज है।

वे शृंगार रस के प्रयोग में इतने प्रवीण थे कि उन्हें साक्षात 'रसमूर्ति' कहा जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर10 प्रसंग

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा के पाठ 'कुटज' से लिया गया है। प्रस्तुत गद्यांश में कुटज के गुणों को ध्यान में रखकर लेखक कहता है कि जब तक व्यक्ति स्वार्थ का त्याग नहीं कर देता, स्वयं को सर्व के लिए न्यौछावर नहीं कर देता तब वह पूर्ण आनंद की अनुभूति नहीं कर सकता है तथा यह मोह को बढाता है व मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है।

व्याख्या

व्यक्ति की आत्मा केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है अपितु अत्यंत व्यापक है व संसार से जुड़ी हुई है। जब तक व्यक्ति में समष्टि बुद्धि नहीं आती, वह स्वयं को दूसरों में तथा दूसरों में स्वयं को जब तक नहीं देखता, तब तक उसे पूर्ण सुख का आनंद प्राप्त नहीं होता है। जब तक वह दलित द्राक्षा की भाँति स्वयं को निचोड़कर, सर्व के लिए समर्पित नहीं कर देता तब तक स्वार्थ एक सत्य है अर्थात् प्रबल है। स्वार्थ मोह को बढावा देता है, व्यक्ति में तृष्णा की भावना को उत्पन्न कर उसे एक दयनीय कृपण बना देता है।

अतः पूर्ण सुख की अनुभूति के लिए 'स्व' को छोड़कर 'सर्व' की ओर ध्यान देना चाहिए।

→ देशज व संस्कृत शब्दों का प्रयोग। (विशेष)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर 11 (ख) प्रस्तुत काव्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित कविता तोड़ो से लिया गया है। काव्यांश में ऊसर, बंजर आदि शब्दों के ज़रिए समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा रूढ़ियों को तोड़ने की बात की गई है।

- तोड़ो-तोड़ो में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
- देशज शब्दों - बंजर, चरती, परती आदि का प्रयोग।
- बिंब विधान का सुंदर प्रयोग।
- काव्य में चित्रात्मकता व लयात्मकता का संयोग।
- भूमि के ज़रिए समाज में व्याप्त कुरीतियों व रूढ़ियों पर व्यंग्य।

(ग) प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' के काव्य भाग 'देवसेना का गीत' से लिया गया है।

- काव्यांश में देवसेना की व्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है।
- भ्रमित स्वप्न - अनुप्रास अलंकार
- गहन-विपिन व तरु-छाया में रूपक अलंकार
- संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली
- ~~[illegible]~~ देवसेना जीवन के उस मोड़ पर है जहाँ स्कंदगुप्त का प्रणय निवेदन भी उसे खुशी नहीं दे पाया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर12 (क) बड़ी-बहुरिया के पति की मृत्यु हो हो जाने के पश्चात उसके जीवन में परेशानियों ~~क~~, दुख तकलीफों का पहाड़-सा टूट पड़ा है। देवर-देवरानी सब चीज़ों का बँटवारा कर शहर चले गए। बड़ी-बहुरिया ~~क~~ बड़ी हवेली में अकेली रहती है। कल तक नौकर-नौकरानी आगे पीछे घूमते थे और वही बड़ी बहुरिया खुद सारे काम ~~स~~ कर रही है।

ऐसे में बड़ी बहुरिया, गाँव के संवदिए हरगोबिन के हाथों अपने मायके संदेश भिजवाना चाहती है कि वे आके उसे वहाँ से ले जाएँ, बथुआ-साग खाकर ~~भला~~ कब तक दिन गुज़ारे व किसके लिए।

हरगोबिन बड़ी बहुरिया के मायके पहुँचता है किंतु संवाद सुनाने में असफल हो जाता है। वह सोचने लगता है जब बड़ी बहुरिया के घरवालों को उसकी दशा पता चलेगी तो उनकी (उसके गाँव की) क्या इज्ज़त रह जाएगी। सब उनके गाँव के नाम पर थूकेंगे अतः वह संवाद नहीं सुना पाता है। तथा वापस गाँव लौट आता है। संवदिया हरगोबिन गाँव की बेइज़्ज़ती न हो इस डर से चाहकर भी संवाद नहीं सुना पाया किंतु विवशता के कारण गाँव वापस आया किंतु अब उसने कमाने का फैसला किया व बड़ी बहुरिया को अपनी माँ मान लिया।

(~~ख~~ग) "मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत है और अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।" - कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन -
पारो मन-ही मन सोच रही थी कि इतनी भीड़ होने के बावजूद जिससे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(संभव) से मुलाकात हुई थी, आज उसी से पुनः मुलाकात हुई। अत्यंत दुर्लभ संयोग है। भले ही पारो संभव को पहली बार मिलकर अचानक भाग गई थी किंतु उससे एक बार पुनः मुलाकात की इच्छा उसके मन में भी थी।

इसी कारण जब दूसरे संभव पुनः उससे मिलता है तो वह मन ही मन प्रसन्न भी होती है। उसके हृदय में संभव से मिलने की इच्छा थी जो इतनी शीघ्र पूरी भी हो गई थी।

इस स्थिति में पारो मन- ही मन मनसा देवी पर बाँधे मनोकामना के धागे को याद करती है और सोचती है मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत और अनूठी है, इधर बांधों उधर लग जाती है।

खण्ड- 'घ'

उत्तर 13 "आरोहण" कहानी में भूपसिंह के चरित्र से मिलने वाले मानवीय मूल्य -

i आत्मविश्वासी

भूपदादा अत्यंत आत्मविश्वासी थे। उन्होंने विषम से विषम

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास से कार्य लिया।

ii धैर्यशील

भले ही उनके सामने में विकट से विकट परिस्थितियाँ आईं किंतु उन्होंने कभी अपना धैर्य नहीं खोया। वे विचलित नहीं हुए अपितु धैर्य से काम लिया।

iii साहसी

भूपसिंह अत्यंत साहसी थे। वे कभी भी संकटों से घबराते नहीं थे। सदा डटकर उनका मुकाबला करते थे।

iv आत्मसम्मानी

भूपदादा से जब रूपसिंह ने तरस खाकर अपने साथ शहर चलने की बात कही तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया।
इस प्रकार ज्ञात होता है उन्हें अपना आत्मसम्मान बहुत प्रिय था।

v स्नेहशील

वे स्नेहशील थे। वे रूपसिंह से बहुत प्रेम करते थे। बाहर से भले ही वे कठोर प्रतीत होते हैं किंतु हृदय से कोमल थे।

उपर्युक्त मानवीय मूल्य सभी मनुष्यों में मिलने कठिन होते हैं किंतु भूपसिंह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे।
भूपसिंह एक अच्छे व्यक्ति तथा भाई थे जिनमें अनेक गुणों का समावेश है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तर 14

(क) "बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित होता है।"

उपर्युक्त कथन पूर्णतः सत्य है। जब बच्चा अपनी माँ का दूध पीता है तो वह केवल दूध ही नहीं पीता अपितु माता व बच्चे के बीच के आत्मीय संबंध की नींव रखता है।
बच्चा माँ दूध पीता है, जो उसके सारे संबंधों का जीवन चरित होता है। बच्चे की तथा माँ के संबंधों को घनिष्ठता प्रदान करता है, उनके हृदय को एक-दूसरे के हृदय से जोड़ता है।
जब बच्चा माँ का दूध पीता है तो वह कभी-कभी उसको काटता भी है, कभी मारता भी है, कभी-कभी माँ भी उसको मारती है। किंतु बच्चा उसके पेट से चिपटा रहता है और वह चिपटाए रहती है। मानो वह माँ की गंध को भी दूध के साथ पी रहा है। वह उसके पेट में अपने लिए एक स्थान खोज लेता है।

अतः जब बच्चा माँ का दूध पीता है तो यह केवल दूध पीना नहीं होता अपितु उसके व माता के संबंधों की घनिष्ठता, प्रेम, वात्सल्य व आत्मीयता की नींव होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था - अर्थात अब मालवा में उतनी वर्षा नहीं होती जितनी पहले कभी हुआ करती थी। इसके निम्नलिखित कारण हैं -

i औद्योगिक

आज जिस विकास की पश्चिमी संस्कृति को हमने अपनाया है, वह हमारे संसाधनों, समाज, नदियों सभी के लिए हानिकारक है। औद्योगिक कारखानों से गंदा पानी व नालों का दूषित जल सब नदियों में मिल जाते हैं तथा नदियों के जल को दूषित कर रहे हैं।

ii वनों की कटाई

वनों की कटाई होने से वन समाप्त होते जा रहे हैं। पेड़-पौधे, हरियाली आदि ~~सब~~ सब समाप्त होने की कगार पर है, जिससे वर्षा पर विपरित प्रभाव पड़ता है।

iii ~~धार्मिक रीति रिवाज~~ नदी व समुद्रों का सूखना

नदियाँ दिनों दिन सूखने लगी हैं। जल वाष्प बनने के लिए जल की मात्रा बहुत कम रह गई।

iv प्रदूषण

प्रदूषण के बढ़ने से चारों ओर वातावरण, वायु, जल सभी प्रदूषित

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

हो रहे हैं तथा धरती का पारिस्थितिक तंत्र भी खतरे में है।

मालवा प्रदेश, जहाँ कभी सदानीरा नदियाँ बहा करती थी, वह आज सूख गया है। पहले की औसत वर्षा भी आज नहीं होती है।

कारण - हमारा पाश्चिमी विकास का मॉडल, दिनों दिन वनों की कटाई है और यदि इसे न रोका गया तो वह दिन भी दूर नहीं है जब धरती पर व पानी की अत्याधिक कमी हो जाएगी।

Sheela Gupta 3150

3151 6

3154